14 (HIN-3) 3056

2019

HINDI

Paper : HIN-3056

(New Syllabus)

(Prayojanmulak Hindi)

(प्रयोजनमूलक हिन्दी)

Full Marks : 64

Time : Three hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. ***किन्हीं दो*** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 12×2=24

(क) सम्पर्क भाषा और अंन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

(ख) हिन्दी की सांवैधानिक स्थिति पर विचार कीजिए।

(ग) राजभाषा से आप क्या समझते हैं ? असम में राजभाषा की स्थिति कैसी है ?

2. ***किन्हीं दो*** के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए नमूना प्रस्तुत कीजिए : 10×2=20

(क) आलेखन

(ख) अर्ध-सरकारी पत्र

(ग) अधिसूचना

(घ) अनुस्मारक।

3. निम्नलिखित में से ***किन्हीं पाँच*** के हिन्दी पर्याय दीजिए : 2×5=10

Term Deposit Receipt, No Objection Certificate, Pay Order, Saving Account, Dividend, Transaction, Block Development Officer, Hindi Cell.

4. सही शीर्षक देकर संक्षेपण कीजिए : 1+9=10

(क) इस देश में हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ब्राह्मण हैं, चान्डाल हैं, धनी हैं, गरीब हैं — विरूद्ध संस्कारों और विरोधी स्वार्थों की विराट वाहिनी हैं। इसमे पद-पद पर गलत समझे जाने का अंदेशा हैं, प्रतिक्षण विरोधी स्वार्थों के संघर्ष में पिस जाने का डर हैं, संस्कारों ओर भावावेशों का शिकार हो जाने का अंदेशा है; परंतु इन समस्त विरोधों और संघातों से बड़ा और सबको छापकर विराज रहा है मनुष्य। इस मनुष्य की भलाई के लिए आप अपने-आपको नि:शेष भाव से देकर ही सार्थक ही सकते

हैं। सारा देश आपका है। भेद और विरोध ऊपरी हैं। भीतरी मनुष्य एक हैं। इस एक को दृढ़ता के साथ पहचानने का यत्न कीजिए। जो लोग भेद-भाव को पकड़कर ही अपना रास्ता निकालना चाहते हैं, वे गलती करते हैं। विरोधी रहे हैं तो उन्हें आगे भी बने ही रहना चाहिए, यह कोई काम की बात नहीं हुई। हमें नए सिरे-से सब कुछ गढ़ना होगा, तोड़ना नहीं है, टूटे को जोड़ना है।

अथवा

साहित्य के उपासक अपने पैर के नीचे की मिट्टी की उपेक्षा नहीं कर सकते। हर सारे बाह्य जगत को असुंदर छोड़कर सौंदर्य की सृष्टि नहीं कर सकते। सुदंरता सामंजस्य का नाम है। जिस दुनिया मे छोटाई और बड़ाई में, धनी और निर्धन में, ज्ञानी ओर अज्ञानी में, आकाश-पाताल का अंतर हो, वह दुनिया बाह्य सामंजस्य नहीं कही जा सकती और इसीलिए वह सुंदर भी नहीं है। इस बाह्य असुंदरता के 'दूह' में खड़े होकर आंतरिक सौंदर्य की उपासना नहीं हो सकती। हमें उस बाह्य असौंदर्य को देखना ही पड़ेगा। निरन्न, निर्वसन जनता के बीच खड़े होकर आप परियों के सौंदर्य-लोक की कल्पना नहीं कर सकते। साहित्य सुंदर का उपासक है, इसीलिए साहित्यिक को असामंजस्य को दूर करने का प्रयत्न पहले करना होगा, अशिक्षा ओर कुशिक्षा से लड़ना होगा, भय और ग्लानि से लड़ना होगा। सौंदर्य और असौंदर्य का कोई समझौता नहीं हो सकता। सत्य आपना पूरा मूल्य चाहता है।